"आभारोक्ति"

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के सफल निर्देशन हेतु सर्व प्रथम मैं विषय मर्मज्ञ अपने शोध-निर्देशक परम् पूज्य गुरूवर **डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह**, रीडर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोभी, जौनपुर के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सुदक्ष निर्देशन, विद्वता पूर्ण चिन्तन, प्रेरणा, सानिध्य, सहज-स्नेह, सहयोग एवं सतत् प्रोत्साहन के फलस्वरूप मैं शोध-प्रबन्ध पूर्ण कर सका हूँ। शोध-प्रबन्ध के मार्ग निर्देशन में उन्होंने मेरे कार्य को गति प्रदान की है। वस्तुतः मैं उनका हृदय से चिर ऋणी हूँ।

मैं श्रद्धेय **डॉ. प्रवीण कुमार सिंह**, प्राचार्य - श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोभी, जौनपुर के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने शोध कार्य हेतु महाविद्यालय से सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध करायी।

डॉ. नरेन्द्र बहादुर सिंह, अध्यक्ष - रक्षा अध्ययन विभाग, डॉ. अनिल कुमार सिंह, डॉ. राकेश सिंह, डॉ. राम कृष्ण सिंह जी का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने विषयगत समस्याओं के निराकरण में मेरा सहयोग किया। भूगोल विभाग के परम सुभेच्छु डॉ. तारकेश्वर सिंह, श्री यशवन्त सिंह, श्री कमलेश सिंह, जन्तु विज्ञान विभाग के डॉ. संजीव कुमार निगम एवं अर्थशास्त्र विभाग के प्रवक्ता डॉ. हीरा लाल सिंह जी का आभारी हूँ जिनके सहयोग से मैं लाभान्वित हुआ।

डॉ. आर.बी. सिंह, अध्यक्ष - रक्षा अध्ययन विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, **डॉ. एम.डी. धर्मदसानी**, निदेशक - नेपाल अध्ययन केन्द्र, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का विशेष आभारी हूँ जिनके प्रेरणा से मैं अपना शोध-प्रबन्ध पूर्ण करने में सफल रहा। जे.एन.यू. (नई दिल्ली) एवं बी.एच.यू. (वाराणसी) के पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे वांछित सूचना एवं विषय सामग्री के एकत्रीकरण में महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

मैं अपने मित्रों श्री राजीव कुमार एवं श्री सुरेश कुमार सिंह के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने सहयोग देकर मेरे कार्य को सुगम एवं सहज बनाया। श्री अतुल राय, 142 विन्ध्य वासिनी नगर कालोनी, अर्दली बाजार, वाराणसी को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने कम्प्यूटर के माध्यम से शोध-प्रबन्ध को शुद्ध एवं शीघ्र टंकित किया। मैं अपनी माता **श्रीमती मंगलावती देवी**, अपनी पत्नी श्रीमती मंजु मिश्रा एवं परिवार के सदस्यों का आभारी हूँ, जिनकी शुभकामनाओं ने अपूर्व शक्ति प्रदान की।

मैं अपना शोध-प्रबन्ध अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री श्याम सुन्दर मिश्र की स्मृति में समर्पित करता हूँ, जिनका आर्शीवाद सदैव मेरे साथ है।

अन्त में सन्दर्भित विषय से सम्बन्धित पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों, पुस्तकों के सम्पादकों, लेखकों आदि के प्रति भी आभार प्रकट करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ, जिनके ज्ञान पुन्ज ने प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की गुणवत्ता वृद्धि में सहयोग प्रदान किया है।

शोधकर्ता

दीपावली
1 नवम्बर 2005

(मनोज कुमार मिश्रा)
प्रवक्ता - रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
डोभी, जौनपुर।

+ + +

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

विषय-प्रवेश I - VII

अध्याय - 1 : ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि --- 1 - 20

अध्याय - 2 : क्षेत्रीय शान्ति एवं सुरक्षा --- 21 - 78

(अ) नेपाल की आन्तरिक समस्यायें एवं भारतीय दृष्टिकोण

(ब) नेपाल का शान्ति क्षेत्र प्रस्ताव एवं भारतीय दृष्टिकोण

(स) सीमा समस्याएं

(द) नेपाल में आई0एस0आई0 की भूमिका, भारतीय दृष्टिकोण

(य) नेपाल में माओवादी आन्दोलन का सम्बन्धों पर प्रभाव

अध्याय - 3 : राजशाही एवं लोकतंत्र के मध्य उलझता नेपाल --- 79 - 117

अध्याय - 4 : आर्थिक सम्बन्ध : व्यापार एवं पारगमन --- 118 - 177

अध्याय - 5 : प्राकृतिक संसाधन एवं पर्यावरण प्रबन्ध --- 178 - 188

अध्याय - 6 : आधुनिक विश्व परिदृश्य में भारत नेपाल सम्बन्धों की भूमिका --- 189 - 198

अध्याय - 7 : उपसंहार --- 199 - 214

BIBLIOGRAPHY --- 215 - 228

+ + +

विषय - प्रवेश

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में भारत - नेपाल सम्बन्ध अनन्य संदर्भों में महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित करते हैं। सबसे पहले तो छोटे एवं सीमित संसाधनों वाले राष्ट्रों की सुरक्षा सम्बन्धी संवेदनशीलता और दूसरी तरफ इन असुरक्षित राष्ट्रों के विशाल एवं संसाधन सम्पन्न पड़ोसी राष्ट्रो की क्षेत्रीय सुरक्षा के नैसर्गिक समीकरण - क्या इन दोनों संदेशों का आधुनिक राज्य व्यवस्था में मिलाप संभव है? भारत निश्चित ही दक्षिण एशिया में असाधारण शक्ति एवं संसाधन युक्त राष्ट्र हैं जिसकी सीमाएँ अनेक ऐसे छोटे राज्यों से मिलती है जो समय - समय पर भारतीय श्रेष्ठता से आक्रांत होते रहे हैं।

यद्यपि भारत के अनेकों पड़ोसी राष्ट्र भारत की मूल संस्कृति से जुड़े हुए हैं चाहे वह भाषा हो या सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश - लेकिन जिस सीमा तक भारत एवं नेपाल की सामीप्यता एवं समरूपता रही है - यह संभवतः अद्वितीय है। एक घोषित हिन्दू राज्य के रूप में नेपाल भारत के बहुतायत हिन्दू समाज में अप्रतिम प्रतिष्ठा प्राप्त है। दोनों राष्ट्रों के बीच सदियों से चली आ रही खुली सीमा, सीमा पार से दोनों देशों का खुला पारगमन एवं निरन्तर बढ़ रहे व्यापारिक एवं सामाजिक बन्धन (विवाह आदि) - इन सभी ने भारत - नेपाल सम्बन्धों को जो अनूठापन दिया है वह भारत का किसी अन्य दक्षिण एशियाई राष्ट्र के साथ नहीं।

लेकिन फिर भी नेपाल अन्य दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के मानसिक सांचे में भारतीय प्रभाव एवं वर्चस्व को अधिकांशतः नकारात्मक दृष्टि से देखता आया है। शायद भारत - नेपाल सम्बन्धों के असंतुलन को किसी सीमा तक एक विशाल राष्ट्र एवं छोटे राष्ट्र के मध्य का नैसर्गिक समीकरण को माना जा सकता है। लेकिन इसकी तुलना किसी भी स्तर पर भारत - बंग्लादेश या भारत - श्रीलंका सम्बन्धों से नहीं की जा सकती। नेहरू युग में भारत ने नेपाली राष्ट्रीय अस्मिता एवं प्रजातांत्रिक पहचान के प्रश्न पर एक नीतिगत दृष्टिकोण अपनाया। क्या था वह बंधन जिसने

आरंभिक वर्षों में शांति एवं मित्रता की संधि (1950) की पृष्ठभूमि निर्मित की? एवं क्या था नेहरू द्वारा उत्तरी सीमाओं की सुरक्षा का प्रश्न एवं उसमें नेपाल का स्थान?

सत्य तो यह है कि नेहरू ने स्वतः राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रजातंत्र के प्रति सघन प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए भी नेपाल के प्रश्न पर ब्रिटिश भारत की सुरक्षा दृष्टि को कमोवेश अपनाया था। मान्यता यह थी कि नेपाल को भूटान एवं सिक्किम के अनुरूप ही हिमालय सीमान्त पर भारत की प्रथम सुरक्षा सीमा के समरूप ही लिया जाय। फरवरी 1951 में भारतीय अनुप्रेरणा से नेपाली शासन में जनतांत्रिक साझेदारी का युग 1955 तक चला और तब तक भारत - नेपाल के विशिष्ट सम्बन्धों (Special Relationship) का दौर भी चला।

1955 में महाराज महेन्द्र के आगमन के बाद नेपाल - भारत सम्बन्धों मे चले आ रहे माधुर्य में कमी सी आने लगी। अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में नरेश महेन्द्र अपने राष्ट्र की राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय नीतियों के निर्धारण में कहीं ज्यादा रूचि रखते थे। भारतीय नियन्त्रण एवं प्रभाव से निकलने के लिए उन्होने चीन के साथ राजनीतिक सम्बन्ध बनाए और कालान्तर में भारत एवं चीन दो महाशक्तियों के बीच समान दूरी बनाए रखने का प्रयास किया था। क्या था, यह सम दूरी या गुटनिरपेक्षता का नेपाली प्रयास? 1956 में ही नेपाल ने 1950 की मित्रता एवं व्यापार संधि में संशोधन की बात उठानी शुरू की और इसके साथ ही विश्व के अन्य शक्तियों से भी उसके सम्बन्ध पुख्ता होने लगे। कालान्तर में भारत - चीन सम्बन्ध बिगड़ने के कारण नेपाल के भू-राजनैतिक एवं सामरिक महत्व को भारतीय नेतृत्व ने स्वीकार किया। भारत - चीन संघर्ष (1962) में एक तरह से नेपाल की अग्नि - परीक्षा हुई, लेकिन नेपाल इन दोनों क्षेत्रिय शक्तियों के युद्ध में तटस्थ रहा और भारत के साथ सहानुभूति जताने के एवज में दशकों से चला आ रहा भारत का नेपाल के प्रजातांत्रिक संघर्षों में सहयोग का क्रम टूट गया।

1972 तक महेन्द्र द्वारा नेपाल में भारतीय वर्चस्व को संतुलन करने की प्रयास और उसके बाद के वर्षों में नरेश वीरेन्द्र द्वारा नेपाल को शांति क्षेत्र बनाए जाने के प्रयासों से भारत - नेपाल सम्बन्ध निरन्तर परिवर्तित होते गये और यह क्रम नेपाल में 1990 में प्रजातांत्रिक संरचनाओं की पुर्नस्थापना तक चलता रहा।

लेकिन इस पूरे दौर में नेपाल द्वारा समय - समय पर एक छोटे राष्ट्र की सुरक्षा के सवाल को उठाने के बावजूद और यहाँ तक की भारत द्वारा स्वतंत्रता के बाद से लगातार दी जाने वाली आर्थिक सहायता को साम्राज्यवाद या उपसाम्राज्यवाद की दृष्टि से आलोचित करने के बाद भी भरत - नेपाल व्यापार निरन्तर बढ़ता गया। लेकिन इस व्यापार की दिशाँए एवं क्रम क्या रहे हैं, यह विचारणीय प्रश्न है। नेपाल में भारत से गये मारवाड़ियों की क्या भूमिका रही है, इस पर निरन्तर तर्क वितर्क होते रहे हैं। यहाँ तक कि कोसी और गंडक जैसे जल संसाधनों को लेकर की गयी संधि भी भारतीय उद्देश्यों को पूरा करती है -- यह प्रचारित किया गया। सत्य तो यह है कि जहां भरतीय जन - नेतृत्व का नेपाल के प्रजातांत्रिक संघर्षों के प्रति असाधारण सहानुभूति रही, वहीं दूसरी ओर संभवतः भारतीय जनमानस नेपाल की राष्ट्रीय पहचान एवं अस्मिता के प्रश्न पर उतना संवेदनशील नहीं पाया गया। परिणामतः भारत अनायास ही आक्रान्त करने वाले ''बड़े भाई'' की भूमिका में सामने आता है जबकि नेपाल उस छोटे भूमिका में, जो कभी गलत हो ही नहीं सकता। भारत एवं नेपाल दोनों को क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में अपने संसाधनों, सामरिक हितों और समकालीन प्रवृत्तियों के अनुरूप ही अपने आपसी सम्बन्धों को गतिशील करना पड़ा है। भारत - नेपाल सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण दूरी पारगमन के प्रश्न को लेकर बनती है। अनेक शताब्दियों से नेपाल का अंतर्राष्ट्रीय जगत से लेना - देना भारत से ही संभव हो पाता था। भारत और नेपाल के बीच 1700 किलोमीटर लम्बी सीमा है, जिससे लगातार नागरिक सम्बन्धो और विचारों का आदान - प्रदान होता रहा है। दूसरी और हिमालय का प्राकृतिक सीमान्त होने के

कारण नेपाल को भारत एक तरह से अपनी प्रथम सुरक्षा सीमा मानता है। इस परस्परता से बाधा तब आती है जब दोनों राष्ट्र एक दूसरे की राष्ट्रीय हित की संवेदनाओं को उचित स्थान नहीं दे पाते।

स्पष्ट है कि भारत - नेपाल सम्बन्ध अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कारकों से लगातार प्रभावित होते रहे हैं और इसके साथ ही इस विषय पर समय - समय पर शोध किया जाय, यह भावना भी अनुप्राणित होती है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में भारत - नेपाल सम्बन्धों का एक विहंगम अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। सात अध्यायों में विभाजित इस शोध-प्रबन्ध में भारत - नेपाल सम्बन्ध को अनेक स्तरों पर विश्लेषित किया गया है।

प्रथम अध्याय में इन सम्बन्धों पर प्रभाव डालने वाले ऐतिहासिक कारकों की रूप रेखा प्रस्तुत की गई है जो भारत - नेपाल सम्बन्धों को दक्षिण एशिया एवं विश्व में किन्ही दो राष्ट्रों के आपसी सम्बन्ध से महत्वपूर्ण बनाते हैं। इस अध्याय में भारत - नेपाल के सम्बन्धों में ब्रिटिश कालीन प्रभावों एवं संधियों का उल्लेख किया गया है जिन्होने आने वाले समय में स्वतंत्र भारत से नेपाल के सम्बन्धों को एक पृष्ठ-भूमि प्रदान की। क्योंकि 1950 की भारत - नेपाल शान्ति एवं मित्रता संधि एक स्तर पर ब्रिटिश भारत एवं नेपाल से की गयी 1923 की संधि का संशोधन ही प्रतीत होती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के प्रथम अध्याय में ही कुछ व्यापक परिवेश का उल्लेख है जिसके अन्तर्गत भारत एवं नेपाल सम्बन्धों का विकास हुआ। यह उल्लेखनीय है कि इन दोनों राष्ट्रो के मध्य आपसी सम्बन्ध संधि एवं समझौतों की श्रृंखला द्वारा नियंत्रित किये गये हैं। इसके अलावा नेपाल एवं भारत के आन्तरिक राजनीतिक विकास क्रम एवं क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक वातावरण का भी उल्लेख यदा - कदा इस अध्याय में किया गया है।

दूसरे अध्याय के अन्तर्गत दोनों राष्ट्रों के सुरक्षा सम्बन्धी लक्ष्यों का एवं एक छोटे राष्ट्र की असुरक्षा की भावना का विवेचन किया गया है नेपाल के आंतरिक समस्याओं के साथ - साथ सातवें दशक में नेपाल के शान्ति क्षेत्र प्रस्ताव एवं भारत की प्रतिक्रिया को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है दोनों राष्ट्रों के मध्य खुली सीमा के परिणामस्वरूप सम्बन्ध की भूमिका , नेपाल में माओवादी आन्दोलन के प्रभाव एवं पाकिस्तानी गुप्तचर संस्था (आई0एस0आई0) की भूमिका का विश्लेषण इस अध्याय में किया गया है।

तीसरे अध्याय में भारत - नेपाल सम्बन्धों के विशेष सन्दर्भ में प्रभावित करने वाले आन्तरिक कारकों की समीक्षा लोकतान्त्रिक मूल्यों के सन्दर्भ में की गयी है। नेपाल में प्रजातान्त्रिक शक्तियों और राजशाही के मध्य चले आ रहे संघर्षों के प्रति भारतीय दृष्टिकोण की समीक्षा की गयी है। महेन्द्र द्वारा प्रतिपादित निर्दलीय पंचायत एवं उसके विरूद्ध जन-प्रतिक्रिया 1980 का राष्ट्रीय संग्रह (National Referendum) एवं 1990 का पंचायत विरोधी प्रजातांत्रिक संघर्ष इन सभी ने भारत को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से नेपाली राजनीति में खींचा। सीमा-पार से आयी भारतीय राजनीतिक विचारधारा एवं नेतृत्व का नेपाल के प्रजातांत्रिक आंदोलन का क्या प्रभाव था और इसनें भारत - नेपाल सम्बन्ध में क्या सकारात्मक और नकारात्मक छाप छोड़ी -- इसका विशुद्ध विवेचन इस अध्याय में संकलित है। यह अध्याय विवेचना के पश्चात इस तथ्य को सामने लाता है कि, क्षेत्रीय स्तर पर प्रजातान्त्रिक संरचनाओं की स्थापना भारत के राष्ट्रीय हित के अनुकूल है।

चौथे अध्याय में भारत - नेपाल सम्बन्धों के आर्थिक आयामों की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। इस विवाद को धारणागत किया गया है कि किसी सीमा तक विशाल संसाधन वाले भारत के लघु एवं आर्थिक दृष्टि से विपन्न नेपाल से आर्थिक सम्बन्धों के प्रवाह को उपसाम्राज्यवादी (Sub-Imperialism) या निर्भरता (Dependency) के सांचे में रखा जा सकता है। इसी अध्याय में

पारगमन के प्रश्न को और 1978 में पारगमन संधि के पुनः नवीनीकरण न होने से भारत - नेपाल सम्बन्धों में उपस्थित अभूतपूर्व संकट की और उसके कारकों की भी व्याख्या की गयी। यह अध्याय स्पष्ट करता है कि भारत नेपाल के आर्थिक सहायता और विकास में तभी तक रूचि ले सकेगा जब तक कि भारतीय क्षेत्रीय एवं राजनीतिक सुरक्षा दृष्टिकोण के अनुरूप नेपाल अपना नीति निर्धारण करता रहेगा। प्रजातंत्र की पुर्नस्थापना के पश्चात जिस स्तर पर नवें दशक में भारत ने नेपाल के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया था उससे यह तथ्य सहज ही अनुप्रमाणित होता है।

पाँचवे अध्याय में नेपाल के प्राकृतिक संसाधनों के दोहन एवं भारत - नेपाल सम्बन्धों पर इन संसाधनों के पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया गया है जिसके विवेचन से स्पष्ट है कि नेपाल विशेष रूप से अपने जल संसाधनों का प्रयोग आपसी सम्बन्धों को और अधिक सुदृढ़ करने में कर सकता है और नेपाल जल संसाधनों के पूर्ण दोहन के द्वारा अपने आर्थिक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ कर सकता है।

छठें अध्याय में भारत - नेपाल सम्बन्धों की विवेचना आधुनिक विश्व परिदृश्य के विशेष सन्दर्भ में किया गया है समीक्षा के उपरान्त यह अनुप्रमाणित होता है, कि विश्व परिदृश्य का भारत नेपाल सम्बन्धों पर पूर्ण प्रभाव पड़ता है।

अन्तिम अध्याय में भारत - नेपाल सम्बन्धों के व्यापक परिदृश्य से उठी कुछ महत्वपूर्ण धारणाओं को प्रस्तुत किया गया है। यह अध्याय इस मान्यता को पुष्ट करता है कि भारत - नेपाल सम्बन्ध शताब्दियों से चले आ रहे एक विशिष्ट सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिदृश्य में संचालित होते रहे हैं जिनकी तुलना भारत की किसी और राष्ट्र के साथ आपसी सम्बन्धों से नहीं की जा सकती है। राजनीतिक, क्षेत्रीय सुरक्षा की अवधारणा अथवा दोनों राष्ट्रों के मध्य खुली

सीमा भारत - नेपाल सम्बन्धों को एक ऐसी विशिष्टता प्रदान करता है जो अप्रतिम है, अनेक अवसरों पर भारत - नेपाल सम्बन्ध आपसी परस्परता का बोध कराती हैं।

प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध ऐतिहासिक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विश्लेषण में प्रयुक्त अन्य आधुनिक विधियों का भी यथा संभव उपयोग किया गया है। भारत एवं नेपाल के सम्बन्धों को प्रकाशित करने वाले प्राथमिक स्रोतों, सरकारी दस्तावेज के साथ - साथ उक्त विषय सम्बन्धी अन्य पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा लेखों का यथोचित अध्ययन किया गया है।